अध्यक्ष की कलम से अंक मार्च 06

प्रिय साथियों,

यह सर्वविदित है कि बैंकिग क्षेत्र अब वैसा नहीं रहा जैसा कि कुछ वर्ष पूर्व तक था । इस वक्त राष्ट्र के प्रधानमंत्री की कुर्सी पर आर्थिक क्षेत्र की वह शख्सियत विद्यमान है जिसे भारतीय संदर्भ में आर्थिक क्षेत्र का थिंक-टैंक कहा जाता हैं । मनमोहन सिंह जी ने कभी वित्त मंत्री के रूप में राष्ट्र की आर्थिकी को एक नई दिशा दी थी । आज वे प्रधानमंत्री हैं । वित्त मंत्री के रूप में उनके पास चिदम्वरम् जैसे गुणी हैं । मौजूदा टीम राष्ट्र को चलाना ही नहीं भारत के आर्थिक परिदृश्य को बदलने की कूव्वत भी रखती हैं । बैकिंग व्यवस्था देश की आर्थिकी में परिवर्तन लाने का सदैव एक महत्वपूर्ण माध्यम माना गया हैं ।

बात बदलाव की चल रही हैं और मैं यह इगिंत करना चाहता हॅू कि बदलाव के ये सकेंत विश्व परिदृश्य से मिलने प्रारम्भ हो गये हैं । जहॉ तक बैकिंग परिदृश्य की बात हैं तो हम देख रहे हैं कि बैकिंग क्षेत्र आगे बढ़ने के लिये कितनी तेजी से बदल रहा हैं । ग्रामीण बैंको के संदर्भ में हम साक्षी है कि कैसे पश्चिमी उ0प्र0 के तीनों ग्रामीण बैंको का विलय हुआ । इससे पूर्व पंजाब के ग्रामीण बैंको का विलय हुआ था । अब समाचार है कि बिहार के ग्रामीण बैंको को मिलाकर मध्य बिहार ग्रामीण बैंक की स्थापना हो गयी हैं । बदलाव के इस माहौल में हम उत्साहित तो है लेकिन खुद में बदलाव लाने में हमारे कुछ साथी असहजता महसूस कर रहे हैं । हमें यह असहजता छोडनी होगी । हमें नई शैली अपनानी होगी और बिल्कुल नई मानसिकता के साथ काम करना होगा । यह नई प्रणाली/शैली या मानसिकता क्या है, हमें खुद तय करना होगा । सोचिये, अर्थव्यवस्था में ये बदलाव, हमें बड़ा बैंक बनाने की ओर अग्रसर कर रहे हैं और हमें अपनी परम्परावादी स्थानीय सोच से उबरना होगा । अपनी नियुक्ति के बाद बिजनौर से गाजियाबाद तक की शाखाओं के भ्रमण के दौरान मैंने देखा हैं कि सभी साथी परिवर्तन की स्थिति से आत्मसात हो रहे हैं । हर एक के मन में शिखर को छूने की चाह हैं । उत्तर प्रदेश ग्रामीण बैंक का अंश होने पर हर एक को गौरव हैं । अब वह समय निश्चित रूप से आ गया हैं जब अपनी कार्यप्रणाली को बेहतर बनाने के लिये हमें आत्मावलोकन करना होगा । आत्मावलोकन का सीधा-सीधा अर्थ हैं खुद की जॉच-पड़ताल । यह जॉच पड़ताल या आत्मावलोकन ही इस तथ्य की गवाही देगा कि क्या बदलाव के इस दौर में क्या हम खुद में भी बदलाव लाने में सक्षम हैं ।

जो मेरा आशय समझ गये हैं, वे विचार करें और जो अभी दूर हैं, वे मनन करें । 31 मार्च एकदम समीप हैं । आशा है हमारे सभी साथी कमर कस चुके होगें । संस्था के प्रति अपनी निष्ठा और बजटीय वचनवद्वता के अनुरूप कार्य करते हुये सभी शाखायें अपना लक्ष्य प्राप्त करें, इन्हीं शुभकामनाओं के साथ ।

-ए.के.लूम्बा